पार्श्व–पट्टावली

—ज्ञानसुन्दर—

जैन इतिहास ज्ञान भानु किरण नम्बर २१

॥ श्री रत्नप्रभसूरिश्वर पादपदमेभ्योनमः ॥

प्राचीन जैन इतिहास

भाग २१ वां

[पार्श्व पट्टावली]

(कविता)

रचयिता—

२०१ ग्रन्थों के लेखक प्रखर वक्ता इतिहासप्रेमी
मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज

प्रकाशक—

श्री रत्न-प्रभाकर ज्ञान-पुष्पमाला
फलोदी (मारवाड़)

वीर सं० २४६५ } प्रति १००० { ओसवाल सं० २३९५

की० अमुल्य भेंट

आ श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर

प्रबन्धकर्ता—
श्रीमान् मोतीलालजी हालाखंडी
ब्यावर (राजपूताना)

पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय इतिहास प्रेमी प्रखर वक्ता मुनिराज श्री ज्ञानसुन्दरजी गुणसुन्दरजी महाराज साहब का सं० १९९५ का चातुर्मास ब्यावर (नयाशहर) में हुआ। श्री संघ के आग्रह से आप श्री ने महा प्रभाविक श्रीभगवती जी सूत्र व्याख्यान में फरमाने का निश्चय किया। श्रीमान गणेशमलजी कोठारी ने सूत्रजी को अपने वहां ले जाकर पूजा प्रभावना रात्रि जागरण और वरघोड़ादि महोत्सव किया। तत्पश्चात श्री संघ ने शास्त्रजी की मुक्ताफल, सुवर्ण रजित व मुद्रिकाओं से पूजन किया जिसके द्रव्य से यह पुस्तक छपवा कर सर्व साधारण की सेवा में उपस्थित की गई है।

प्रबन्ध कर्ता

पं० रामनिवास शर्मा
के प्रबन्ध से फाइन आर्ट प्रेस
ब्यावर में प्रकाशित

भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा

अर्थात्

पार्श्व पट्टावली

पार्श्वनाथ तेवीसवें, तीर्थेश क्या वर्णन करू ।
उपकार जिनका है महा, श्वासोश्वास उर में धरू ॥
'अ सि आ उ सा' मंत्र से, धरणेन्द्र बनाया नाग को ।
अहा-हा मैं वन्दन करू, त्रिय जग के महा भाग्य को ॥१॥

१—श्री शुभदत्त गणधर

प्रदाता थे वे सुभ गति के, गणधर शुभदत्त जानिये ।
रचना द्वादशांग की जिन केरी, तत्व ज्ञान पहचानिये ॥
धर्म धुरन्धर सुभट विजयी, प्रकाश सूर्य सा किया ।
वन्दन किया उनके चरण में, धन्य था उनका जिया ॥

२—आचार्य श्री हरिदत्त सूरीश्वर

हरिदत्त गत दूषण सभी, तृतीय पट्ट वर सूरि हुए।
विनाशक वे अज्ञान के, ज्ञानोद्योत के कर्ता हुए॥
सहस्त्र शिष्य सह लोहित्य को, दीक्षित किया स्वधर्म में।
जैन बनाये लाखों को, फिर स्थिर किये षट्कर्म में॥३॥

३—आचार्य श्री आर्य समुद्र सूरीश्वर

आर्य समुद्र थे ज्ञान के, फिर दान सूरि ने दिया।
आवन्ती उद्यान में जा, समवसरण जिसने किया॥
राट रानी कुंवर केशी, वे दीक्षित हुए वैराग्य से।
डंका बजाया सत्धर्म का, प्रशस्त शासन राग से॥४॥

४—आचार्य श्री केशिश्रमण सूरीश्वर

आचार्य वर श्रमण केशि, तुर्य पट्ट सरदार थे।
अखण्ड थे व्रती ब्रह्मचारी, तप तेज के नहीं पार थे॥
प्रदेश्यादि नृप बारह, और असंख्य नरनार थे।
जैन बनाये उन सभी को, जिनका बड़ा उपकार थे॥५॥

भगवान वीर प्रभु का शासन

भूप सिद्धार्थ मात त्रिसला, क्षत्री कुण्ड वर स्थान था।
अवतार लिया श्री वीरप्रभु ने, तपधारी केवल ज्ञान था॥
संघ चतुर्विध करी स्थापना, अहिंसा झंडा फहराये थे।
पार्श्वनाथ के थे सन्तानिय, वीर शासन में आये थे॥६

५—आचार्य श्री स्वयंप्रभ सूरीश्वर

स्वयंप्रभ सूरिगुण भूरि, वे विद्या के भंडार थे ।
यज्ञ बली उन्मूल कारण, वर आपही कुठार थे ॥
श्रीमाल नगर उद्यान में, समवसरण किया आपने ।
होने का था पशु यज्ञ जहां, उपदेश दिया था आपने ॥७
नब्बे सहस्त्र राजा प्रजा को, जैनी बनाये कर दया ।
सुन यज्ञ फिर पदमावती में सूरि पधारे कर मया ॥
दे उपदेश मिथ्या तम छुड़ाया. घर पैंतालीस हजार को
शान्त्यादि के मन्दिर बनाये, कब भूले उपकार को ॥८॥

६—आचार्य श्री रत्नप्रभ सूरीश्वरवीर नि० सं० ५२

रत्न सदृश पट्ट षष्ठम्, श्री रत्नप्रभ सूरि ने लिया ।
उपकेशपुर में आयके, उपदेश तो जब्बर दिया ॥
देवी चंडा नृप मन्त्री, क्षत्री तो सवा लक्ष थे ।
दीक्षा शिक्षा जैन धर्म की, देकर लिया सत्पक्ष थे ॥९॥
वासक्षेप मंत्र विधि से, उन सबकी शुद्धि करी ।
महाजन संघ बनाय के, पुनः उसकी ही वृद्धि करी ॥
कालान्तर से हुआ नाम उपकेश, अब प्रसिद्ध ओसवाल है ।
उपकारी गुरु चरण में, वन्दन सदा त्रिकाल है ॥१०॥

ऊहड़ मन्त्री मन्दिर बनाया, निर्वाण वर्ष सीतर वीर को
आकर कोरंट श्रीसंघ ने, विनती करी गुरुधीर को ॥
लब्धि से दो रूप बनाकर, निज रूप उपकेश में रहे ।
व्योम मार्ग जाकर कोरंट में, एक लग्नमें प्रतिष्ठा कररहे ॥

७—आचार्य श्री यक्षदेव सूरीश्वर

सप्तम पट्ट सूरि हुए, यक्षदेव उनका नाम था ।
जैनधर्म प्रचार करना, यही उनका काम था ॥
अंग बंग कलिंग मगध, आये पुनः मरुधर देश में ।
सिन्ध धरा में आप सिधारे शिष्य थे साथ विशेष में ॥
कष्ट सहे फिर भूखे रहे, उपकर था रग रग में ।
शिकार जाते राज कुंवर को. बोध दिया सद् मग्ग में ॥
रुद्राट् राजा कुंवर प्रजा, जैनी तो सब वे बन गये ।
चमकादिया वहां धर्म को, हैं धन्य उन सूरि के भये ॥

८—आचार्य श्री कक्क सूरीश्वर

पट्ट आठवें कक्क सूरि ने, उद्धार किया निज देश का ।
अहिंसा की नीव डारी, उच्छेद किया अक्ष शेष का ॥
मंडित मन्दिरों से की धरा, भक्ति रंग खूब बरसाया था ।
उद्योत किया था जिन शासन का, मिथ्यात को मार भगाया था ॥

९—आचार्य देवगुप्त सूरीश्वर

बलि होते की रक्षा करके, सूरि जिसको बनाये थे ।
देवगुप्त पट्ट नौवे होकर, झण्डे खूब फहराये थे ॥

कच्छ सौरठ लाट मरुधर, पंचाल पावन कराये थे ।
सिद्धपुत्र को जीत बाद में, अपना शिष्य बनाये थे ॥१५

१०—आचार्य सिद्धसूरीश्वरजी

सिद्ध बचन थे लब्धि उनके, दशवां पट्ट दिपाया था ।
सिद्ध सूरीश्वर नाम आपका बादी दल क्षोभाया था ॥
लाखों जन को मांस छुडा कर; अहिंसा धर्म चमकाया था ।
पूर्वादि भू भ्रमण करके, जैन झण्डा फहराया था ॥१६

११—आचार्य रत्नप्रभ सूरीश्वर

जंगम कल्पतरु सम शोभित, चिन्तामणि कहलाते थे ।
रत्नप्रभ सूरी एकादश, पट्ट को आप दिपाते थे ॥
द्रुतगति से मशीन शुद्धि की, आपने खूब चलाई थी ।
कठिन परिसह सहन करके, शासन सेवा बजाई थी ॥१७

१२—आचार्य यक्षदेव सूरीश्वर

पट्ट बारहवें यक्षदेव की, भक्ति विबुध जन करते थे ।
बादी मानी और वितण्डी, देख देख कर जरते थे ॥
उद्योत किया शासन का भारी, नये जैन बनाते थे ।
वीर प्रभु के शुभ सन्देश को, घूम घूम के सुनाते थे ॥

१३—आचार्य कक्क सूरीश्वर वी० नि० ३३६

पट्ट तेरहवें लब्धि भाजन, कक्कसूरि अभिधान था ।
जैन बनाना शान्ति कराना, यही आपका काम था ॥

उपकेश में उपद्रव हुआ जब, श्री संघ इन्हे बुलाया था।
अष्ट तप करने से देवी, आकर शीश झुकाया था ॥१६॥

पूज्यवर ! इन मूर्ख लोगों ने, शुभ प्रतिष्ठा का भंग किया।
टांकी लगाकर ग्रन्थी छेदाई, जिसका ही यह फल लिया

भवितव्या टारी नहीं टरती, रक्त धारा अब बन्द करो।
विधि बताई वृहद शान्ति की, जिसको सब मिल जल्द करो ॥

तातेड़, बाफना, बलाह, करणावट, श्रीमाल, कुल मोरख थे।
विरहट्ट, श्रेष्ठि, गौत्र, नव ये, दक्षिण दिशा सु रख थे ॥

संचेति, आदित्यनाग, भूरि भाद्र, चिंचट कुमट कनौजिये थे।
डिडु लघुश्रेष्टि ये नव, वांमें पंचामृत लिये थे ॥

मंत्राक्षर और क्रिया विधि से, शांति स्नात्र भणाई थी।
कृपा थी गुरुवर की जिसमें, शांति सर्वत्र वरताई थी।

ऐसे सद्गुरु का कोई सज्जन, शुद्ध मन ध्यान लगाता है ॥
इस लोक और परलोक में, मन वंछित फल पाता है ॥

१४—आचार्य देवगुप्तसूरि

चौदहवें पटधर देवगुप्त, सूरीश्वर यशः धारी थे।
जिनके गुणों का पार न पाया, आप बडे उपकारी थे ॥

अजैनों को जैन बनाकर, महाजन संघ बढ़ाया था।
मन्दिरों की प्रतिष्ठा करके, जीवन शिखर चढ़ाया था ॥

१५—आचार्य श्री सिद्ध सूरीश्वर

पट्ट पन्द्रहवे सिद्ध सूरीश्वर, चिंचट गौत्र कहलाते थे।
आगम ज्ञानबल विद्या पूर्ण, जैन झण्ड फहराते थे॥
वल्लभी का भूप शिलादित्य, चरणे शीश झुकाते थे।
सिद्धाचल का भक्त बनाया, जैनधर्म यश गाते थे॥

१६—आचार्य श्री रत्नप्रभ सूरीश्वर

पट्ट सोलहवें अतिशय धारी, रत्नप्रभ सूरीश्वर थे।
प्रतिभाशाली उग्र विहारी, अज्ञ हरण दिनेश्वर थे॥
प्रथम पूज्य का पद कर जीवन, ज्योति पुनः जगाई थी।
करके नत मस्तक बादी का, धर्म की प्रभा बढ़ाई थी॥

१७—आचार्य श्री यक्षदेव सूरीश्वर वि० सं० ११५

सप्तदश श्री यक्षदेव सूरि, दश पूर्व ज्ञान के धारी थे।
वज्रसेन के शिष्यों को दिना, ज्ञान बड़े दातारी थे॥
चन्द्र नागेन्द्र निवृति विद्याधर, कुल चारों के विधाता थे।
उपकार जिनका है अति भारी, भूला कभी नहीं जाता है॥

१८—आचार्य श्री कक्कसूरि वि० सं० १५७

पट्ट अठारहवें कक्क सूरीश्वर, अदित्य नाग उज्जारे थे।
सहस्रों साधु और साध्वियां, जैसे चन्द्र संग तारे थे।
बादी मानी अरू पाखण्डी देख दूर भग जाते थे।
सुर नर पति जिनके चरणों में, झुक २ शीश नमाते थे॥

१९—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर सं० १७४

अदित्यनाग कुल आप दिवाकर, देवगुप्त यश धारी थे।
सरस्वती की पूर्ण कृपा, सद् ज्ञान विस्तारी थे॥
दर्शन ज्ञान चरण गुण उत्तम, पुरुषार्थ में पूरे थे।
वन्दन उनके चरण कमल में, तप तपने में सूरे थे॥

२०—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर

बीसवें पट्टधर सिद्ध सूरीश्वर, विद्या गुण भन्डारी थे।
शासन के हित सब कुछ करते, चमत्कार सुचारी थे॥
ज्ञान दिवाकर लब्धि धारक, अहिंसा धर्म प्रचारी थे।
उनके गुणों का पार न पाया, सुरगुरु जिभ्या हजारो थे॥

२१—आचार्य श्री रत्नप्रभ सूरीश्वर सं० १९९

श्रेष्ठिकुल श्रृंगार अनोपम, पारस के अधिकारी थे।
रत्नप्रभ सूरि गुण भूरि, शासन में यश धारी थे॥
योग विद्या में थी निपुणता, पढ़ने को कई आते थे।
अजैनों को जैन बनाये, जिनके गुण सुर गाते थे॥

२२—आचाय श्री यक्षदेव सूरीश्वर

संचेती गौत्र के थे वे भूषण, यक्षदेव वर सूरी थे।
ज्ञान निधि निर्माण ग्रन्थों के, कविता शक्ति पुरी थे॥
प्रचारक थे जैन धर्म के, अहिंसा के वे स्थापक थे।
उज्ज्वल यश अरु गुण जिनके, तीन लोक में व्यापक थे॥

२३—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर

पट्ट तेवीसवें कक्कसूरीजी, आदित्य नाग कुल भूषण थे।
जिनकी तुलना करके देखो, चन्द्र में भी दूषण थे॥
षट्दर्शन के थे वे ज्ञाता, वादी लज्जित होजाते थे।
अजैनों को जैन बना कर, नाम कमाल कमाते थे॥

२४—आचार्य श्री देवगुप्तसूरीश्वर

चार बीस पट्ट सूरि शोभे, देव गुप्त यश धारी थे।
कुमट गौत्र उद्योत किया गुरु, जैन धर्म प्रचारी थे॥
शुद्ध संयम अरु तप उत्कृष्टा. ज्ञान गुण भण्डारी थे।
सुविहित शिरोमणि जिनकी सेवा, करते पुन्य के भारी थे॥

२५—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर

श्रेष्ठिकुल अवतंस पच्चीसवें, सिद्ध सूरी विराजे थे।
जैन धर्म के आप दिवाकर, गुण गगन में गाजे थे॥
विद्या और सिद्धि ये दोनों, वरदान दिया यशधारी को।
शासन का उद्योत किया गुरु, वन्दन हो उपकारी को॥

२६—आचार्य श्री रत्नप्रभ सूरीश्वर

पट्ट छबीसवें रत्नप्रभ सूरि, पंचम रत्न प्रवीण थे।
जैसे पञ्चानन सिंह को देखे वादी सब भये दीन थे॥
देश विदेश में विहार करके नये जैन बनाते थे।
उग्र विहारी शुद्ध आचारी, संख्या खूब बढ़ाते थे॥

२७—आचार्य श्री यक्षदेव सूरीश्वर

पट्ट सतावीस यक्षदेव गुरु, भूरि गौत्र दिपाया था।
तप जप ज्ञान अपूर्व करके, जैन झण्ड फहराया था॥
संघ चतुर्विध के थे नायक, सुरनर शीश झुकाते थे।
सुन करके उपदेश गुरु का, मुमुक्षु दीक्षा पाते थे॥

२८—आचार्य श्री ककसूरीश्वर

बीस अट्ठ पट्ट ककसूरि हुए, श्रेष्टि कुल उज्जारा था।
बादी गंजन बन केसरी, जैन धर्म प्रचारा था॥
जैन मन्दिरो की करी प्रतिष्ठा, दर्शन खूब दिपाया था।
जिनके गुणों को कहे बृहस्पति, फिर भी पार न पाया था॥

२९—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर

श्री श्रीमाल गौत्र के भूषण, देवगुप्त सूरि था नाम।
सुविहित आप थे पूर्वधर, धर्म-प्रचार करना था काम।
कन्या कुब्ज देश का नायक, चित्रगेंद अधिकारी था।
उनको जैन बनाया गुरु ने, सुवर्ण मन्दिर मणिका भारीथा।

३०—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर

तीसवें पट्ट धर सिद्धसूरीश्वर, तप कर सिद्धि पाई थी।
नत मस्तक बन गये बादीगण, विजय भेरी बजाई थी।
किये ग्रन्थ निर्माण अपूर्व, प्रतिष्ठाएँ खूब कराई थी।
अमृत पी कर जिन वाणी का कइएक दीक्षा पाई थी॥

३१–आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वर

एकतीस पट्ट सूरि शिरोमणि, रत्नप्रभ उद्योत किया।
षट्दर्शन के थे वे ज्ञाता, ज्ञान अपूर्व दान दिया॥
सिद्ध हस्त अपने कामो में, जैन-ध्वज फहराया था।
देश देश में धवल कीर्ति, गुणों का पार न पाया था।

३२–आचार्य श्री यक्षदेवसूरीश्वर

पट्ट बतीसवें यक्षदेव गुरु, त्यागी वैरागी पूरे थे।
वीर गम्भीर उदार महा, फिर तप तपने में शूरे थे॥
धर्मान्ध म्लेच्छ मन्दिरों पर, दुष्ट आक्रमण करते थे॥
उनके सामने बद्धकटि से, बली हो रक्षा करते थे॥

म्लेच्छ आकर मुग्धपुर में, कई मुनियों को मार दिये।
घायल कर डाले कई को पकड़ सूरि को कैद किये॥
जबरन म्लेच्छ बनाया जैन को, उसने सूरि को छोड़ दिये।
आये षटकूंप धाम अकेले, आद निज पुत्रों को भेट किये।

अहा, इन सूरीवर के गुण, महिमा कहांलों गाऊँ मैं।
प्राण प्रण से मन्दिर मूर्तियां, बचाये केती बताऊ मैं॥
श्रावक भक्त भी ऐसे थे वे, निज पुत्रोंको भेंट कर देते थे।
सूरिवर के शिष्य बना कर, शासन सेवा फल लेते थे॥

३३–आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर

पट्ट तेतीसवें कक्क सूरि ने, अदित्यनाग प्रभा बढाई थी।
योग विद्या स्वरोदय ज्ञान में, पूर्ण सफलता पाई थी॥
अर्बुदाचल जाते श्री संघ के, जीवन आप बचाये थे।
सोमा शाह के बन्धन छूटे सहायक आप कहलाये थे।

३४–आचार्य श्री देवगुप्तसूरीश्वर वि० सं० ४६०

चौतीसवें पट्टधर देवगुप्त थे, सूरि सूरि गुण भूरि थे।
पूर्वधर थे ज्ञान दान में, कीर्ति कुबेर सम पूरि थे॥
देववाचक को दो पूर्व का. पद क्षमाश्रमण प्रदान किया।
जिनने पुस्तकारूढ आगम कर, जैन धर्म को जीवन दिया।

३५—आचाय श्री सिद्धसूरीश्वर वि० सं० ५२०

पैतीसवें पट्ट धर सिद्धसूरीश्वर, विरहट्ट कुल के नायक थे।
ज्ञान ध्यान तप संयम से, वे सर्व गुणों में लायक थे॥
सम्मत सिखर की करी यात्रा, पावापुरी पद दायक थे।
जैन धर्म प्रचारक पूरे, कई भूपति उनके पायक थे॥

४७

पट्ट पैतीस पर्यन्त सूरि के, पांच नाम क्रमशः आते थे।
रत्नप्रभ, यक्षदेव, कक्कसूरि, देव सिद्ध कहलाते थे॥
उनके बाद भयि कई शाखा, दो नाम आदि के भण्डार किये।
कक्क देव सिद्ध इन तीनों ने, सब शाखा में स्थान लिये।

३६—आचार्य श्री कक्क सूरीश्वर

पट्ट छत्तीसवें कक्कसूरि हुए, श्रेष्टि गौत्र के भूषण थे।
करे कौन स्पर्द्धा इनकी, समुद्र में भी दूषण थे।
प्रभाव आपका था अति भारी, भूपत शीश झुकाते थे।
तप संयम उत्कृष्टी क्रिया, सुर नर मिल गुण गाते थे॥

३७—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर

सेतीसवें पट्टधर हुए सूरिवर, श्रेष्टि कुल के शृङ्गार थे।
देवगुप्त था नाम आपका, क्षमादिक गुण अपार थे॥
प्रतिबोध देकर भव्य जीवों का, उद्धार हमेशां करते थे।
प्रतिष्ठा की महिमा सुन के, पाखण्डी नित्य जरते थे॥

३८—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर

अट्ठतीसवें वे पट्ट विराजे, सिद्धसूरि अतिशय धारी थे।
शुद्ध संयमी रू कठिन तपस्वी, आप बडे उपकारी थे॥
प्रचार गुरु ने किया अहिंसा, शिष्यों की संख्या बढ़ाई थी।
सिद्ध हस्त थे अपने कामों में, अतुल सफलता पाई थी॥

३९—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर

करुणा-सागर कक्कसूरीजी, नौ वाड शुद्ध ब्रह्मचारी थे।
करते भूप चरण की सेवा, जैन धर्म प्रचारी थे॥
अनेक विद्याओं से थे भूषित, देव सेव नित्य करते थे।
हितकारी थे संघ-सकल को, वे आज्ञा सिर पर धरते थे।

४०–आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर वि०सं० ७१५

पट्ट चालीसवें देवगुप्त हुए, जिनकी महिमा भारी थी।
आत्मबल अरु तप संयम से कीर्ति खूब विस्तारी थी।
शिथिलाचारी दूर निवारी, आप उग्र विहारी थे।
गुण गाते सुरगुरु भी थाँके, शासन को हितकारी थे॥

४१–आचार्य श्री सिद्ध सूरीश्वर सं० ७४६

एकचालीस पट्टधर पारख, सिद्धसूरीश्वर नायक थे।
उज्ज्वल गुण छत्तीस जिनमें, सूरि पद के लायक थे।
घूम घूम कर जैन धर्म का, विजय डंका बजवाया था।
जिन मन्दिरों की करी प्रतिष्ठा, संघ सकल हरषाया था।

४२–आचार्य श्री कक्कसुरीश्वर

दो चालीस पट्ट ककसूरी, आर्य गौत्र उजारा था।
किशोर वय में दीक्षा लेकर, स्याद्वाद प्रचारा था॥
दीक्षा शिक्षा दी शिष्यों को, संख्या खूब बढ़ाई थी।
भू भ्रमण कर जैन धर्म की, शिखर ध्वजा चढ़ाई थी॥

४३–आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर वि०सं० ८३०

संचेती कुल तिलक आप थे, पट्ट तेतालीस पाया था।
देवगुप्त सूरीश्वर जिनका, देवों ने गुण गाया था॥
भूपति भ्रमर कमल चरणों में, झुक झुक शीश नमाते थे।
विद्वता की धाक सुन कर, वादी जन घबराते थे॥

४४–आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर

चौंचालीसवें सिद्ध सूरीश्वर, श्रेष्टि कुल दिवाकर थे।
दर्शन ज्ञान चारित्र वारिधि, गुण सब ही लोकोत्तर थे॥
थे वे जलनिधि करुणा रस के, पतित पावन बनाते थे।
ऐसे महापुरुषों के सुन्दर, सुरवर मिल गुण गाते थे॥

५७

महा प्रभाविक कृष्णाऋषि हुए, तप तपने में सूरे थे।
सपाद लक्ष देश के अन्दर प्रभाव आपके पूरे थे॥
नागपुर नारायण श्रेष्टि, राजा भी समकित पाया था।
लाखों जैन बनाये गुरु ने, मन्दिर निर्माण कराया था॥

४५—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० ६१८

पैंतालीसवें कक्कसूरीन्द्रा, आर्य गौत्र उज्जागर थे।
चन्द्र समान शीतलता जिनकी, सद् ज्ञान के आगर थे।
वीर वाणी उपदेशामृत से, भव्यों का उद्धार किया।
प्रतिष्ठायें कई करवाई, मौलिक ग्रन्थ निर्माण किया॥

४६—आचार्य श्रीदेवगुप्त सूरीश्वर सं० ६६३

छचालीस पट्टधर शोभे, देवगुप्त सूरीश्वर थे।
अवतंस थे चोरड़िया कुल के, ज्ञान के दिनेश्वर थे॥
देश विदेश में धर्म प्रचार की, आज्ञा शिष्यों को करदी थी।
नूतन जैन बनाये लाखों, जैन ज्योति चमका दी थी॥

४७—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर सं० १००८

सैंतालीसवें पट्ट प्रभाकर, सिद्ध सूरीश्वर नामी थे।
दृढ थे दर्शन ज्ञान चरण में, शिवसुन्दरी के कामी थे ।
ग्रन्थ निर्माण किये अपूर्व कई ग्रन्थ कोष थपाये थे।
उन्नति शासन की करके, मन्दिरों पे कलश चढ़ाये थे ॥

६१

जम्बूनाग ज्योतिष विद्या में, सफल निपुणता पाई थी।
लोद्रवा .पट्टन में जाकर, विप्रों से विजय मनाई थी॥
जो नहीं करने देते थे वहां, मन्दिर प्रतिष्ठा करवाई थी।
ग्रन्थ किया निर्माण आपने, विद्वता की भेरी बजाई थी ॥

४८—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० १०५१

बाप्प नाग नाहटा जाति, जिनके वीर शिरोमणि थे।
अट्ठ चालीसवें पट्ट बिराजे, कक्कसूरि सु गणि थे ॥
भैंसाशाह का कष्ट मिटाया,छाणा सब सोना बनाया था।
सिक्का चलाय जिससे जाति, नाम गदइया पाया था ॥

४९—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर सं० ११०८

उन पचासवें पट्ट पारख वर देवगुप्त सूरीश्वर थे।
सिद्धगिरी का संघ साथ में, भैंसाशाह अग्रसर थे ॥
अपमान किया माता का गुर्जर. बदला जिसका लिधा था।
उद्योत किया शासन का सूरि. अमर नाम सुभ किधा था॥

५०—आचार्य श्री सिद्ध सूरीश्वर सं० ११२८

पट्ट पचासवें सिद्धसूरीश्वर, गदइया जाति बडवीर थे।
आत्म बली विद्या गुण पूरण, सागर जिसे गम्भीर थे॥
वीर सूरि भावहड़ा गच्छ के, जिनका उपद्रव हटाया था।
कदर्पि ने चैत्य करवाया, प्रतिष्ठा कर यश पाया था॥

५१—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० ११७४

पट्ट एकवान श्रेष्टि भूषण, भूमण्डल आप विचरते थे।
राजा महाराजा जिन चरणों की, सेवा भक्ति करते थे॥
राजगुरु नामे कक्कसूरि, जेष्ठ गच्छ कहलाते थे।
हेमचन्द्र गुरु कुमारपाल, चरणों में शीश झुकाते थे॥

६६

स्वर्गवास हुआ सूरि का, सब आचार्य वहां आये थे।
हेमचन्द्र सूरि गुण भूरि, सबको ऐसे सुनाये थे॥
गया शेर आज दुनियां से, अरे हिरणों निश्चिन्त रहो।
उनके हुँकारा मात्र से तृण, गिरते मुंह से थे यों कहो॥

६७

वाचनाचार्य पद्मप्रभ था, त्रिपुरा देवी वरदान दिया।
कलिकाल सर्वज्ञ सूरीजी, जिनके दिल को बस किया॥
योग विद्या बतलाई राणी को, पाटण में उद्योत किया।
डांबरेल नगर का था भूपत, यशोदित्य को मंत्र दिया॥

५२—आचार्य श्रीदेवगुप्त सूरीश्वर सं० १२११

पट्ट बावनवें देवगुप्त हुए, सूरि सदा जयकारी थे।
ज्ञान भानु की तीव्र रश्मि से, मिथ्या अब्ज विडारी थे॥
चमत्कार था आत्मबल का, दुनियां शीश झुकाती थी।
उज्ज्वल यश जगत में छाया, देवनारी गुण गाती थी।६८

५३—आचार्य श्रीसिद्ध सूरीश्वर सं० १२२३

तेपनवें पट्ट सिद्ध सूरीश्वर, बलाह गौत्र चमकाया था।
म्लेच्छों ने उपकेशपुर में, उपद्रव खूब मचाया था॥
वीरभद्र थे शिष्य आपके व्योम मार्ग विहारी थे।
प्राण प्रण से की तीर्थ रक्षा, गुरु ऐसे चमत्कारी थे॥६९

५४—आचार्य श्रीकक्क सूरीश्वर वि० सं० १२५२

पट्ट चौपनवें कक्कसूरीश्वर, जांघड़ा ज्ञाति के वीर थे।
करते चरण कमल की सेवा, वे भवसागर के तीर थे॥
सिंह गर्जना सुन के वादी, गीदड़ जीव बचाते थे।
देश देश में घूम सूरिजी शासन सितारा चमकाते थे॥७०

५५—आचार्य श्रीदेवगुप्तसूरीश्वर सं० १२५९

पट्ट पचावन देवगुप्त हुए बोत्थरा गौत्र सितारे थे।
स्वपर मत्त के थे वे मर्मज्ञ, वादी मद विडारे थे॥
जब्बर था प्रभाव आपका, नृपति पैरों में नमते थे।
अप्रमत्त मन के थे स्वामी, ज्ञान ध्यान में रमते थे॥७१

५६—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर सं० १२६०

छपनवें पट्ट सिद्ध सूरीश्वर, जाति चोपड़ा उज्जारी थी।
निमित स्वरोदय योग विद्या में, कीर्ति आपकी भारी थी
कई मुमुक्षु आते पढने को, ज्ञान दान दातारी थे।
क्षमाशील दया और शांति, शासन के हितकारी थे॥

५७—आचार्य श्रीकक्कसूरीश्वर सं० १२६५

पट्ट सतावन कक्कसूरीश्वर छाजेड़ कुल के दीपक थे।
सूर्य सदृश थी क्रान्ति आपकी, मोह शत्रु के जीपक थे॥
व्याख्यान में मनुष्य तो क्या, देव मुग्ध बन जाते थे।
उपकारी गुरु राज जिनके, सुर नर मिल गुण गाते थे॥

५८—आचार्य श्रीदेवगुप्तसूरी सं०१२७४

पट्ट अठावन देवगुप्तसूरि, संचेति कुल प्रभाविक थे।
त्यागी वैरागी थे फिर तपस्वी, ज्ञान गुण स्वभाविक थे।
देख आपकी प्रभा मानव, संसार समुद्र को तरते थे।
अहा-हा ऐसे गुरु देवन की, धन्य वे वन्दन करते थे॥

५९—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर सं० १२७७

सिद्ध सूरीश्वर पट्ट गुणसठवें, चोरड़िया कुल दिपाया था।
अथाह था जो ज्ञान आपका, कवि किरीट कहलाया था।
राजसभा में उपदेश करके, कई भूपति समझाये थे।
जिनके गुण गगन में गाजे, सुरनर पार न पाये थे॥

६०—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० १२८३

पट्ट साठवें कक्कसूरीश्वर, वीर नाहटा भारी थे।
दिव्य ज्ञान तप संयम के गुण, खूब अतिशय धारी थे॥
प्रभाविक थे जिन शासन के, सत्य धर्म प्रचारी थे।
किया उद्धार अनेक भव्यों का, ऐसे पर उपकारी थे।

६१—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर

एक साठवें पट्ट देवगुप्तसूरि, बागरेचा भव तारक थे।
कहां लों करू आपकी महिमा, अनेक गुणों के धारक थे॥
त्रिय शत नर और नारी सात सौ, दीक्षा दे उद्योत किया।
निर्माण किये ग्रन्थों के भारी, ज्ञान अपूर्व दान दिया॥

६२—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर सं० १२८६

पट्ट बांसठवें सिद्धसूरीश्वर वैद्य मेहता कुल उजागर थे।
छत्तीस सहस्र सुवर्ण मुद्रा से, ज्ञान पूजा रत्नाकर थे
तीर्थ यात्रा संघ निकाला, प्रतिष्ठायें आप करवाई थी।
स्याद्वाद सिद्धान्त वीर का, उज्वल ज्योति जगाई थी॥

६३—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० १२९६

पट्ट तेसठवें कक्कसूरिजी, हत्थुडिये कुल के हीरे थे।
वादी गंजन स्वमत्त मण्डन, धर्म प्रचारक धीरे थे॥
तप संयम शुद्ध क्रिया पात्र, कई दीक्षा दे उद्धार किया।
कोटि बन्दन करते उनको, जैन झण्ड फहराय दिया॥

६४—आचार्य श्रीदेवगुप्त सूरीश्वर सं० १३०५

पट्ट चौसठवें देवगुप्त सूरि, भद्र गौत्र उज्जागर थे।
थे शिष्य विद्या के सागर, जैसे गुण रत्नाकर थे॥
साहित्य क्षेत्र की करी उन्नति, स्याद्वाद विस्तारा था।
चमका दिया फिर जैन धर्म को, अहा-हा भाग्य हमारा था॥

८१

वीरचन्द्र मुनि अद्भुत ज्ञानी, कई सूरि पढने को आते थे।
प्रभाव था यंत्र मंत्र का, देव देवी सेवा पाते थे॥
मरुकोट क्षेत्रपाल का, उपद्रव आप मिटाया था।
प्रल्हादनपुर की राजसभा में, कृष्णादत्त को नमाया था॥

८२

देवचन्द्र को देवी सरस्वती, साक्षात् हो वरदान दिया।
सप्त छत्रों से धर्म रुचि को, जीत छत्रों को छीन लिया॥
तैलंग देश में धर्म कीर्ति था, दिगम्बर को परास्त किया।
करणाटक के महादेव की, भक्ति से ग्रन्थ निर्माण किया॥

८३

उपाध्याय हरिश्चन्द्र आपके, चमत्कारी उपदेशक थे।
कच्छ देश जाडेजा क्षत्री, कुँवारी कन्या के घातक थे॥
उपदेश देकर उस प्रथा को, आपने बन्द करवाई थी।
और कई उपकार करके, यश की भेरी बजाई थी।

६५–आचार्य श्रीसिद्धसूरीश्वर सं० १३३०

पट्ट पैंसठवें सिद्धसूरीश्वर, वैद्य मेहता कुल नायक थे।
रत्न खान से रत्न ही निकले, शिष्यगण भी सब लायक थे।
कोट्याधीश थे भक्त आपके, संघपति पद के दायक थे।
श्रेष्टि गौत्र दिवाकर देशल, समरसिंह भी पायक थे ।

८४

उपाध्याय मुनि शिखर ने, ध्यान की धुन लगाई थी॥
ज्ञानी थे फिर तप करने में, लब्धि अनेकों पाई थी।
वाचनाचार्य था नागेन्द्र, जो नागेन्द्र गुण गाते थे ।
लक्ष्मीकुमार और सोमचन्द्र, संघ को बहुत सुहाते थे।

८५

मंगल कुम्भ मुनीन्द्र जिसकी, विद्वत्ता जग जहारी थी।
माण्डवगढ में अष्टापद की, प्रतिष्ठा प्रभाकारी थी।
हरदेव व विजयदेव ने, यात्रार्थ संघ निकाले थे।
लक्ष मनुष्य था साथ संघ में; छ 'री' को वे पाले थे॥

८६

तीर्थ यात्रा निमित्त देशल ने, विराट्संघ निकाले थे।
कृपा थी गुरुवर की जिन पर, फिर उदार भाव निराले थे॥
चौदह करोड द्रव्य व्यय करके, सुयश खूब कमाया था।
साधर्मियों के बन्धु बन कर सहायता आराम पहुचाया था॥

देशल अपने जेष्ट पुत्र को, देवगिरि को पठाया था।
जिसने वहां के किले बीच में, मन्दिर जबर बनाया था॥
गुरुदेव से करी विनती, प्रतिष्ठा जाकर करवाई थी।
राजा प्रजा भये अनुरागी, तैलंग में ज्योति जगाई थी॥८७

८८

अलाउद्दीन महा खूनी का, जुलम भारत में भारी था।
जला दिये भण्डार ज्ञान के, ऐसा अत्याचारी था॥
महातीर्थ शत्रुञ्जय ऊपर, सेना लेकर आया था।
तेरहसौ गुणन्तर सम्वत्, तीर्थ उच्छेद कराया था॥

८९

मन्दिर और मूर्तियां सबको, दुष्ट नष्ट कर डाले थे।
हा-हा कार हुआ भारत में, छाये बादल काले थे॥
कृपा सिद्धसूरि की पाकर, देशल उद्धार कराया था।
समरसिंह सा पांच पुत्रों ने, वैद्य कुल दिपाया था॥

९०

महिपाला राणा आरासण, फलही खांन से दीनी थी।
पूजा हीरा पन्ना मोती से, संघ बधा कर लीनी थी॥
तेरहसौ इकोत्तर वर्षे, पाटण से संघ चलाया था।
तीर्थ प्रतिष्ठा सिद्ध सूरि ने, करके मंगल मनाया था॥

९१

भरतादि कई उद्धार करवाये, स्वाधीन सामग्री सारी थी।
धर्मान्ध मुगलों के राज में, बात बड़ी यह भारी थी।
वीर समरसिंह दो वर्षों में, तीर्थ स्वर्ग बनाया था॥
अहा-हा धन्य समरसिंह, जिनके गुण सुर गाया था॥

६६—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० १३७१

पट्ट छांसटवें कक्कसूरीश्वर, गदइया कुल शृंगार थे।
संघपति हो सुवर्ण मुद्रा से, खूब किया सत्कार थे॥
होकर सूरि जैन धर्म का डंका बजाया जोर से।
ग्रन्थ निर्माण किये कई मौलिक, वादी हटाये शोर से॥६२

६७—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर सं० १४०६

पट्ट सड़सठवें देवगुप्त हुए चोरड़िया जाति के वीर थे।
प.रंगत थे सर्व आगम के, पुनः गुणों में गम्भीर थे॥
भ्रमन भूमण्डल में करके, धर्म खूब चमकाया था॥
राज सभा में शास्त्रार्थ कर, विजय डंका फहराया था॥६३

६८—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर सं० १४७५

अड़सठ पट्ट पर सिद्धसूरीश्वर, बोत्थरा कुल दिपाया था।
वचन लब्धि और उपदेशक थे, धर्म को खूब बढ़ाया था॥
सूर्य सम था प्रकाश आपका, सुयश विश्व में छाया था।
अल्प बुद्धि से महिमा कहां लौं, करू पार नहीं पाया था॥

६९—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० १४९८

नौसाठ पट्टधर कक्कसूरिजी, समदड़िया शाख उज्जागर थे।
निर्मल ज्ञान पावन था, जीवन गुण गण के वे सागर थे॥
प्रचार किया था जैन धर्म का, क्रान्ति खूब फैलाई थी।
मेदपाट नर नाथ के दिल में, ज्योति जैन जगाई थी॥

जाता हुआ भस्म ग्रह ने, अशेष फटकार दिखाई थी।
श्रीसंघ की राशि पे आया, धूम्रकेतु विग्रह फैलाई थी॥
संस्कृति यवनों की पाकर, लुम्पक था अन्याय किया।
निज अपमान के कारण उसने, शासन को नुकसान दिया॥
६७

जिन प्रतिमा जिनागम ये दोनो, शासन के दृढ स्थम्भ थे।
हस्तक्षेप करके निकाला, मत अपना ही दम्भ थे॥
अज्ञलोग मिल उस अज्ञ को, देकर साथ बढा दिया।
अहा-हा कलिकाल तेरा, धन्य है इस जग में जिया॥
६८

७०—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर सं० १५२८

देवगुप्त सूरि पट्ट सित्तरवें, नाबरिया जन मन भाया था।
न करके परवाह राजमान की, सूरि-पद शोभाया था॥
'कर्मे सूरा सो धर्मे' सूरा, सत्य करके दिखलाया था।
भूपति वादी चरण कमलों में, आकर शीश झुकाया था॥
६९

७१—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर सं० १५६५

पट्ट इकोत्तर सिद्धसूरिश्वर, छाजेड़ जाति के भूषण थे।
सूरि पद का महोत्सव कीना, मन्त्री लाल नहीं दूषण थे॥
प्रभाविक थे जिन शासन के, शिष्यों की संख्या बढाई थी।
लुम्पकों को जीते बाद में, विजय ध्वज फहराई थी॥

७२–आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० १५९९

बहोतरवें पट्ट कक्कसूरिवर, शाखा वैद्य दिवाकर थे।
हस्तागत थी चित्र वेलली, सुकृत में दानेश्वर थे॥
त्रि सय नारी दीक्षा धारी, शत असी शिष्य बनाये थे।
उद्योत किया था जैन धर्म का, लुम्पक को समझाये थे॥

७३–आचार्य श्री देवगुप्तसूरीश्वर सं० १६३१

पट्ट तिहोत्तर देवगुप्त सूरि, श्रेष्टिकुल प्रभाकर थे।
साथ पिता के दीक्षा ली थी, विद्या में विद्याधर थे॥
शुद्ध संयम अरु क्रिया पात्र, प्रभाव जिनका भारी था।
कुमति हटाये भूप नमाये, नौ बाड़ शुद्ध ब्रह्मचारी थे॥

७४—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर सं० १६५५

पट्ट चहोतर, सिद्ध सूरीश्वर, बाफणा गुण भण्डारी थे।
देश देश में कीर्ति आपकी, शासन को हितकारी थे॥
अमृत था वाणी में जिनके. प्रखर उपदेश के दाता थे।
वादी नित नतमस्तक रहते, स्वपर मत के ज्ञाता थे॥

७५—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० १६८९

पट्ट पचूतर कक्कसूरीश्वर, श्रेष्टि वीर यश धारी थे।
उन पंचानन सिंह सामने, वादी बन गये छारी थे॥
भू भ्रमन कर नर नारी को, दीक्षा दी उपकारी थे।
सद्मार्ग कुमति को लाये, ऐसे वे हितकारी थे॥

७६—आचार्य श्री देवगुप्तसूरीश्वर सं० १७२७

देवगुप्त छहोतर पट्ट सूरी, सूर्य सम प्रकाश किया।
थी बिजली शासन की उनमें, उदार वृत्ति से ज्ञान दिया॥
रक्षक थे वे स्वधर्म के, पतितों का उद्धार किया।
जो भूले उपकार गुरु का, व्यर्थ गमाय उसने जिया॥१०४

७७—आचार्य श्री सिद्ध सूरीश्वर सं १७६७

पट्ट सितोतर सिद्धसूरीश्वर, रांका शाखा दृढ़ धर्मी थे।
बालपने अभ्यास ज्ञान का, जैन धर्म के मर्मी थे॥
सिद्धहस्त थे सब विद्या में, योग साधना पूरी थी।
की थी सेवा जिन गुरुवर की, सिद्धि कभी नहीं दूरी थी॥१०५

७८—आचार्य श्री कक्क सूरीश्वर सं० १७८३

पट्ट इठन्तर हुए सूरीश्वर, कक्कसूरि बड़ भागी थे।
सुविहितों में आप शिरोमणि, जैन धर्म के रागी थे॥
अन्य गच्छों के मिल मुमुक्षु, पढने को नित्य आते थे।
वात्सल्यता क्या कहू आपकी, हो दत्त चित्त पढाते थे॥१०६

७६—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर सं० १८०७

पट्ट गुणियासी, देवगुप्तसूरि, श्रेष्ठि वैद्य विचक्षण थे।
तप संयम वैराग्य रंग में, जिनके रंग विलक्षण थे॥
शिथिलाचारी थे कई साधु, जिनको खूब फटकारा था।
उग्र विहारी उनको बनाये, फिर लुम्पकों को ललकारा था॥

उपाध्याय था सहजसुन्दर, संवेग पक्ष उद्धार किया ।
कठिन क्रिया तप देख आपका, कई मुमुक्षु संयम लिया ॥
आगम लोपक मूर्ति उत्थापक, जिनको भी अपनाय लिया ।
शुद्ध संवेगी उद्धारक शाखा, सत्यमार्ग प्रकाश किया ॥१०८

८०—आचार्य श्री सिद्धसूरीश्वर सं० १८४७

पट्ट असी पर सिद्ध सूरीश्वर, वैद्य मेहता कुल दीपक थे ।
अलिप्त थे जल कमल सम, मद कंदर्प के जीपक थे ॥
विद्या मन्त्र के थे अधिकारी, यश दुनियां में छाया था ।
चमत्कार को नमस्कार था, कई भूपति शीश जुकाया था ॥

८१—आचार्य श्री कक्कसूरीश्वर सं० १८५१

पट्ट इक्यासी कक्कसूरिजी, वैद्य जाति उज्जारी थी ।
विद्वता आपकी थी अति नामी, यश की रेखा भारी थी ॥
यति पंक्ति में रहने पर भी, निस्पृही शुद्धाचारी थे ।
अहा-हा ऐसे श्रीपूज्य भी शासन के हितकारी थे ॥११०

८२—आचार्य श्री देवगुप्त सूरीश्वर सं० १९०५

पट्ट बैयांसी देवगुप्त सूरि, वैद्य विचक्षण भारी थे ।
व्याकरण न्याय तर्क विभूति, सैद्धान्तिक जग जाहारी थे ॥
मन्त्रेश्वर सरदारसिंह ने, महोत्सव खूब बनाया था ॥
गुरु कृपा से उस मन्त्री ने, संघपति पद को पाया था ॥१११

८३–आचार्य श्री सिद्ध सूरीश्वर सं० १६३५

पट्ट तैयांसी सिद्ध सूरिजी, श्रेष्ट वैद्य कहलाते थे ।
प्रतिभाशाली थे यशःधारी, जहां जाते आदर पाते थे ॥
बीकानेर नरेश भक्ति से, महाराव ने महोत्सव किना था ।
उपकेशगच्छ के अन्तिम सूरी, सुयश जीवन में लिना था ॥

८४—आचार्य श्रीकक्कसूरीश्वर सं० १६६५

पट्ट चौरासी योग्य समझ कर, कक्कसूरि को स्थान दिया ।
फिर भी नहीं थे लायक पद के, अधिकार श्रीसंघ छीन लिया ।
व्यवहार सूत्र में थी यह आज्ञा, श्रीसंघ जिसका पालन किया ।
वरदान था पूर्व सूरि का, भवितव्यता करके दिखा दिया ।

११४

पार्श्वनाथ की शुद्ध परम्परा, निग्रन्थ गच्छ कहलाता था ।
स्वयंप्रभ सूरी थे विद्याधर, गच्छ विद्याधर कहाता था ।
रत्नप्रभ सूरि उपकेश पुर में, महाजन संघ बनाया था ।
उस प्रदेश में विहार करने से, गच्छ उपकेश कहलाया था ।

११५

कुन्कुदाचार्य से भई शाखा, भीन्नमाल उसका नाम था ॥
खट कूंप से शाखा दूसरी, कलिकाल का यह काम था ॥
चन्द्रावती में रहे जो साधु; चन्द्रावती शाखा था नाम ।
चतुर्थ शाखा अरु निकली, खजूर पट्टन था उसका धाम ॥

११६

वीर शासन में गच्छ चौरासी, इनसे भी बहु अधिक लिया।
उन सब ने उपकेश गच्छ का, पूज्य भाव से आदर किया॥
जिसका कारण था वे उपकारी, जो महाजन संघ बनाया था।
जेष्ठ गच्छ था कारण दूसरा, इनसे पूज्य भाव दर्शाया था।

११७

सुविहित हुए शुद्धाचारी, शासन सेवा बजाई थी।
श्रीमाल पोरवाल बनाये, ओसवंश स्थापना कराई थी॥
जैनसमाज उन उपकारी का, विनय करे इसमें कौन नवाई है।
कोटिश वन्दन चरण कमल में, ज्ञानसुन्दर सुखदाई है।

११८

सम्वत् उनीसे साल पचाणु, नयानगर है ब्यावर शहर।
संघ आग्रह से किया चौमासा, आनन्द की बरताई लहर॥
गुरु उपकार ने करी प्रेरणा, गुणसुन्दर का मिल गया साज।
ज्ञान पंचमी गुरु गुण रचना, जन्म सफल बनाया आज॥

पृष्ट	पद्य	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	६	३	संध	संघ
५	६	४	भूले	भूलें
६	१३	१	उपकर	उपकार
६	१४	२	अल	अब
१२	३८	३	चित्रगेंद	चित्रांगद
१४	४६	३	सम्मत	सम्मेत
१६	५२	४	थांके	थाके

अब केवल थोड़ी सी पुस्तकें और बची हैं

❀ मूल्य भी बहुत कम कर दिया है ❀

—० जल्दी मंगवालें वरना पछताना पड़ेगा ०—

समय चले जाने पर चौगुनी कीमत से भी नहीं मिलेगी

अतः समय हाथ से न जाने दें

१-मूर्तिपूजा का प्राचीन इतिहास और श्रीमान् लौंका-शाह बडे ही परिश्रम और शोध खोज से यह ग्रन्थ लिखवाया गया है ऐतिहासिक प्रमाण और चित्रों से परिपूर्ण है आज पर्यन्त भी ऐसा ग्रन्थ कहीं भी नहीं छपा है पृष्ठ करीब १००० प्राचीन चित्र ५३ पक्की कपड़ा की दो जिल्दें। मूल्य ५) रुपये था उसका ३) रु० कर दिया है।

२-जैन जाति महोदय सचित्र प्रथम खण्ड-जैन धर्म एवं जैन जातियों का प्राचीन इतिहास अपनी शानी का यह एक ही ग्रन्थ है पृष्ठ १००० चित्र ४३ पक्की जिल्द मूल्य ६) रु०.थ जिसका अब ४।) रु० है।

३-समरसिंछपा है पृष्ठ करीब १००० प्राचीन थ है, जिसके प कपड़ा की दो जिल्दें। मूल्य ५) तेहास का ज्ञान होगरु० कर दिया है।

महोदय सचित्र प्रथम खण्ड-

शा. नवतियों का प्राचीन इतिहास ी मूथा

ग्रन्थ है

कटरा बाजार—जोधपुर (मारवाड़)